SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

व्यंग्यकार शरद जोशी

राहुल देव एम., शोधार्थी, हिंदी विभाग
श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कलाडी, केरल, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
राहुल देव एम., शोधार्थी, हिंदी विभाग
श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय,
कलाडी, केरल, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/05/2021
Revised on : -----
Accepted on : 05/06/2021
Plagiarism : 00% on 29/05/2021

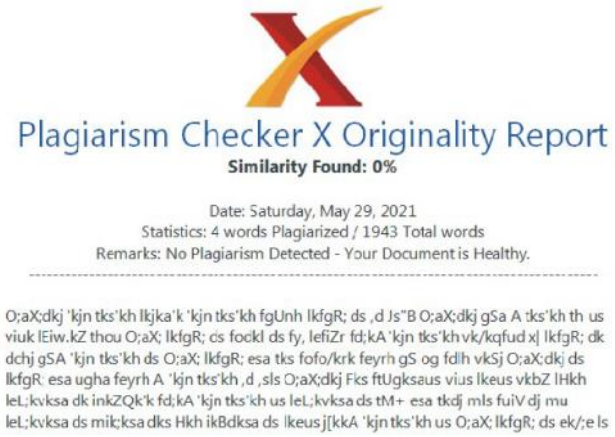
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Saturday, May 29, 2021
Statistics: 4 words Plagiarized / 1943 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

O;aX;dkj 'kjn tks'kh lkjka'k 'kjn tks'kh fgUnh lkfgR; ds ,d Js"B O;aX;dkj gSa A tks'kh th us viuk lEiw.kZ thou O;aX; lkfgR; ds fodkl ds fy, lefiZr fd;kA 'kjn tks'kh vk/kqfud x| lkfgR; dk dchj gSA 'kjn tks'kh ds O;aX; lkfgR; esa tks fofo/krk feyrh gS og fdlh vkSj O;aX;dkj ds lkfgR; esa ugha feyrh A 'kjn tks'kh ,d ,sls O;aX;dkj Fks ftUgksaus vius lkeus vkbZ lHkh leL;kvksa dk inkZQk'k fd;kA 'kjn tks'kh us leL;kvksa ds tM+ esa tkdj mls fuiV dj mu leL;kvksa ds mik;ksa dks Hkh ikBdksa ds lkeus j[kkA 'kjn tks'kh us O;aX; lkfgR; ds ek/;e ls

शोध सार

शरद जोशी हिन्दी साहित्य के एक श्रेष्ठ व्यंग्यकार हैं। जोशी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन व्यंग्य साहित्य के विकास के लिए समर्पित किया। शरद जोशी आधुनिक गद्य साहित्य का कबीर है। शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य में जो विविधता मिलती है वह किसी और व्यंग्यकार के साहित्य में नहीं मिलती। शरद जोशी एक ऐसे व्यंग्यकार थे जिन्होंने अपने सामने आई सभी समस्याओं का पर्दाफाश किया। शरद जोशी ने समस्याओं के जड़ में जाकर उससे निपट कर उन समस्याओं के उपायों को भी पाठकों के सामने रखा। शरद जोशी ने व्यंग्य साहित्य के माध्यम से समाज को सुधारने का प्रयत्न किया। शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य के विषयों में और शैली में जो विविधता हमें देखने को मिलती हैं वह किसी और व्यंग्यकार की रचना में नहीं मिलती।

मुख्य शब्द

शरद जोशी, व्यंग्य साहित्य, हरिशंकर परसाई, कबीर दास.

आदिकाल से एक बीज के रूप में उत्पन्न हुआ हिन्दी व्यंग्य साहित्य आज एक विराट वृक्ष बन चुका है। उस विराट वृक्ष को गहरी नींव प्रदान करने में कबीर दास, हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल, नरेंद्र कोहली, प्रेम जन मेजय, हरीश नवल जैसे अनगिनत व्यंग्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन नामों में शरद जोशी का योगदान सबसे अधिक और महत्वपूर्ण रहा है। हम आगे चलकर इस विषय पर चर्चा करेंगे इसके पहले व्यंग्य के अर्थ एवं परिभाषा को जान लेते हैं। व्यंग्य शब्द अंग्रेजी में प्रयुक्त सटायार 'satire' शब्द का अनुवाद हैं जिसका अर्थ है: "व्यंजना आवृत्ति से प्रकट शब्द का गूढ़ार्थ (hidden meaning)" ।[1]

डॉ. संतोष विजय येरावर ने व्यंग्य को परिभाषित

करते हुए लिखा है "व्यंग्य जीवन और जगत की प्रतिछाया होता है। वह व्यवस्था में व्याप्त समस्याओं पर दृष्टिपात मात्र नहीं करता बल्कि हमें उन समस्याओं से जूझने की चेतना और शक्ति प्रदान करके सावधान भी करता है।"[2]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने व्यंग्य को परिभाषित करते हुए लिखा है "व्यंग्य वह है जहां कहने वाला अधरोष्ठ से हंस रहा हो और सुनने वाला तिल–मिला उठा हो फिर भी कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासास्पद बना लेना हो जाता हो।"[3]

व्यंग्य को अन्य साहित्य विधाओं से व्यंग्य की भाषा, शैली और महत्व ही अलग करता है। व्यंग्य की भाषा में सबसे अधिक ग्रामीण शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों और गालियों का ही प्रयोग होता है, जिसके कारण व्यंग्य की भाषा शैली अन्य विधाओं से भिन्न होती हैं। व्यंग्य में प्रयुक्त होने वाली गालियों का मतलब उन गंदे शब्दों से नहीं बल्कि उन शब्दों से हैं, जिससे व्यंग्यकार अपने तत्कालीन विसंगतियों के प्रति अपने क्रोध या घृणा व्यक्त करते हैं। उस रचना को पढ़ने वाले पाठक के मन में भी रचना में निहित विकारों का संचार होता है, उसके मन में भी उन विकृतियों के प्रति क्रोध उत्पन्न हो जाता है। व्यंग्यकार का लक्ष्य ही यह है कि पाठक समाज के हर क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों के प्रति जागृत रहे तथा उसके मन में भी उन विकृतियों के खिलाफ क्रोध उत्पन्न हो ताकि वह सतर्क रहकर इन विसंगतियों से लड़ सकें। उस लक्ष्य को प्राप्त करने तथा आम जनता को समझाने के लिए वह दूसरे साहित्य विधाओं से भिन्न ग्रामीण शब्दों और गालियों से भरी भाषा का प्रयोग करता है। व्यंग्य की भाषा शिकारी के तीर के समान होता है, व्यंग्यकार रूपी शिकारी अपने शिकार के नजदीक आने पर इस भाषा रूपी बाणों से उसपर वार करता है। व्यंग्य की भाषा में शर्म और संकोच का भाव नहीं होता है। व्यंग्य की भाषा का एक–एक शब्द का भी अर्थ होता है। व्यंग्य का लक्ष्य समाज को सुधारना और उनको विसंगतियों से सचेत करना है।

हिन्दी व्यंग्य साहित्य का सबसे बड़ा व्यंग्यकार कबीर दास जी है, इसमें कोई शक नहीं लेकिन आधुनिक युग का सर्व श्रेष्ट व्यंग्यकार कौन है? इस सवाल का जवाब है शरद जोशी जी। शरद जोशी जी को हम आधुनिक युग के कबीर भी बोल सकते हैं या जोशी जी को गद्य साहित्य का कबीर भी कहा जा सकता है। शरद जोशी जी का सम्पूर्ण जीवन व्यंग्य साहित्य के लिए समर्पित था। शरद जोशी जी ने तटस्थ रहकर ही अपने व्यंग्य लेखन किया। वह सही मायने में एक समाज सुधारक थे। शरद जोशी हिन्दी साहित्य के प्रथम व्यंग्यकार थे, जिन्होंने पहली बार 1968 मुंबई के कवि सम्मेलन के मंच पर गद्य पढ़ा और किसी कवि से अधिक लोकप्रिय हुए।

शरद जोशी का जन्म 21 मई 1931 ई, को उज्जैन में हुआ था। शरद जोशी जी पढ़ने में होशियार थे। उनके मन में हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम था, वह हिन्दी में हमेशा अव्वल आते थे। शरद जोशी हमेशा से एक लेखक बनना चाहते थे उन्होंने कई जगहों पर नौकरियां कीं। अंत में शरद जोशी जी ने मध्यप्रदेश के सूचना विभाग की नौकरी छोड़कर साहित्य लेखन में अपने जीवन को समर्पित किया। बचपन से ही उन्हें साहित्य में रुचि था। 1950 में शरद जोशी ने नई दुनिया पत्रिका (इंदौर) में "परिक्रमा" नामक व्यंग्य स्तंभ लिखना शुरू किया। वह 'परिक्रमा' में छोटे–छोटे लघु व्यंग्य निबंध लिखते थे, बाद में 1958 को इन व्यंग्य रचनाओं का संकलन परिक्रमा नाम से प्रकाशित हो गया। "परिक्रमा" शरद जोशी जी का पहला व्यंग्य संग्रह है। उन्होंने आगे चलकर ज्ञानोदय, माधुरी आदि पत्रिकाओं में भी व्यंग्य लेखन किया। 1960 से उन्होंने 'धर्मयुग' पत्रिका में और 1985 के बाद नव भारत टाइम्स पत्रिका में स्तंभ लेखन किया। 1971 में शरद जोशी द्वारा लिखित दूसरा व्यंग्य रचना "किसी बहाने" प्रकाशन में आए उसके बाद "जीप पर सवार इलियाँ" (1971), रहा किनारे बैठ (1972), तिलस्म (1973), दूसरी सतह (1973), पिछले दिनों (1979) आदि व्यंग्य रचनाओं के संग्रह प्रकाशन में आए। शरद जोशी व्यंग्य नाटकों का भी सृजन कर के हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। 1979 में शरद जोशी व्यंग्य नाटकों का संकलन "दो व्यंग्य नाटक" का प्रकाशन हुआ। इस संकलन में शरद जोशी द्वारा रचित "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" और "अंधों का हाथी" शीर्षक दो नाटक शामिल है। दोनों नाटकों में जोशी जी ने उनके तत्कालीन राजनीतिक विकृतियों पर तीखा प्रहार किया है। "मैं और केवल मैं" (1993) नामक एक उपन्यास भी शरद जोशी जी के तूलिका से निकले। शरद जोशी जी के व्यंग्य साहित्य के हर क्षेत्र में अपने योगदान के लिए 1990 राष्ट्रपति द्वारा "पद्मश्री उपाधि" से सम्मानित किया गया। सितंबर 5

1991 को मुंबई में महान व्यंग्यकार शरद जोशी जी ने अंतिम सांस ली।

शरद जोशी ने उनके सामने आए सभी विसंगतियों पर निडर रहकर प्रहार किया। शरद जोशी के लेखन का लक्ष्य समाज को सुधारना था। उन्होंने कभी भी किसी भी राजनीतिक दल के पक्ष में रहकर व्यंग्य लेखन नहीं किया। जोशी जी ने तटस्थ रहकर ही व्यंग्य लेखन किया है, इसी कारण से हम जोशी को आधुनिक काल के सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यकार मान सकते हैं क्योंकि एक व्यंग्यकार के लिए तटस्थता सबसे अनिवार्य गुण है। शरद जोशी जी के व्यंग्य लेखन के बारे में व्यंग्य आलोचक सुभाष चंदर जी कहते हैं "शरद जोशी के व्यंग्य की सबसे बड़ी विशेषता उनकी कलात्मकता है। शिल्प को लेकर जितने प्रयोग उन्होंने किए हैं, उतने कहीं नहीं मिलते।"[4]

शरद जोशी जी ने लगभग अपने समकालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक विषयों पर प्रहार किया है। भ्रष्टाचार, दलबदल की प्रवृत्ति, मूल्यहीन राजनीति, चापलूसी जैसे राजनीतिक विकृतियों को जोशी जी ने खोलकर दिखाया उसके अलावा धार्मिक अंधविश्वास, महंगाई, किसानों की दयनीय अवस्था, दहेज प्रथा, मिलावट एवं काल बाजारी, भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों का पतन जैसे अनेक विषयों पर जोशी जी ने तीखा प्रहार किया और पाठकों को इन विकृतियों के प्रति सचेत किया। हरिशंकर परसाई के समान शरद जोशी के व्यंग्य रचनाओं में विषयों की विविधता और विशालता हमें देखने को मिलते हैं, लेकिन परसाई जी की तरह जोशी जी ने विसंगतियों को किसी राजनीतिक विचारधारा की दृष्टि से नहीं देखा। व्यंग्य आलोचक सुभाष चंदर जी कहते हैं "परसाई जी की तरह उनपर तटस्थ ना होने के आरोप नहीं लग सकते। उनका व्यंग्यकार राजनीतिक घटनाक्रम क्रम को किसी विशेष पार्टी के नजर से नहीं देखता।"[5] कबीर दस जी की तटस्थता से जोशी जी काफी प्रभावित थे।

शरद जोशी ने कबीर की क्रांतिकारी व्यंग्य परंपरा को आधुनिक युग में नव जीवन प्रदान किया। उनका जीवन पूर्णतः व्यंग्य के लिए समर्पित रहा शरद जोशी को आधुनिक व्यंग्य साहित्य का युग पुरुष हम मान सकते हैं। डॉ. येरावार संतोष विजयराव जोशी जी के बारे में कहते हैं: "हिन्दी साहित्य में शरद जी कबीर की उस विशिष्ट लेखन–परंपरा के उत्तराधिकारी हैं, जिसमें भारतेन्दु, निराला, नागार्जुन और हरिशंकर परसाई जैसे यशस्वी व क्रान्तिधर्मी रचनाकार आते हैं।"[6]

शरद जोशी की व्यंग्य रचनाओं में कहानी की तन्तु भी है और निबंध की कसावट भी है, इसी कारण हम उन रचनाओं को कहानी या निबंध की श्रेणी में नहीं रख सकते। उन्होंने व्यंग्य लेखन के लिए फैंटसी, डायरी, गद्य–पद्य मिश्रित शैली, डायरी शैली आदि नूतन शैलीगत प्रयोग किए और उनमें जोशी जी को सफलता भी प्राप्त हुआ। शरद जोशी को कबीर दास की भांति भाषा पर जबरदस्त अधिकार था। उन्होंने भाषा को एक अस्त्र के समान इस्तेमाल किया। जोशी जी के व्यंग्य साहित्य का हर एक विषय आम जनता से जुड़ा हुआ विषय रहा है। "एक शंख बिन कुतुबनुमा" रचना में उन्होंने पान खाने जैसी सरल बात को लेकर भारत के भ्रष्ट राजनीतिक नेताओं पर जो प्रहार किया है ऐसे लिखने वाले लेखक बहुत ही विरल देखने को मिलते हैं। शरद जोशी ने समाज में व्याप्त हर कुरीतियों से पर्दा फाश करके शोषित आम जनता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। कबीर दास जी का व्यंग्य कहीं ना कहीं हिंदुओं और मुसलमानों को छिड़ाते थे लेकिन शरद जोशी ने व्यंग्य को हास्य की मीठी चाशनी में डुबोकर पाठकों के सामने रखा जिसके कारण उनका व्यंग्य हमें हंसाते भी है, सोचने के लिए मजबूर भी करते हैं। शरद जोशी समस्याओं के जड़ में जाकर उसकी आलोचना कर के उपचार प्रस्तुत करते थे। वे मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थक थे फिर भी उन्होंने मार्क्सवाद और समाजवाद का प्रयोगिक स्तर पर जो पतन हुआ है, उसपर भी व्यंग्य किया है। शरद जोशी की "महंगाई और समाजवाद" रचना में समाजवाद का प्रायोगिक स्तर पर जो पतन हुआ उसका चित्रण हम देख सकते हैं।

शरद जोशी ने "भैंसनहि माह रहत नित बकुला", "नेतृत्व की ताकत", "लंच" आदि व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से कपट नेताओं का पोल खोला साथ ही साथ "एक मिनी भ्रष्टाचार", "अपने अपने भ्रष्ट द्वीप", "हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे", "सरकार का जादू" आदि उस उच्चकोटी की रचनाएं है, जहां जोशी जी भारत की भ्रष्ट व्यवस्था पर तीखा प्रहार करते हुए व्यंग्य की पराकाष्ठा को छू लेता है। शरद जोशी ने इसके अलावा "चुनाव गीतिका सरलार्थ", "जंबू

द्वीप में चुनाव", "चुनाव एक मुर्गाबीती", "सेवक राम निर्भय के तीन पत्र" आदि रचनाओं के माध्यम से भारत के चुनाव और राजनीतिक व्यवस्था में व्याप्त गुंडागर्दी, जातिवाद और धर्म के राजनीति का पोल खोला है। शरद जोशी के अधिकतर व्यंग्य रचनाओं का मूल विषय राजनीतिक विकृतियां ही रहा है। लेकिन राजनीतिक विसंगतियों के अलावा कृषकों की समस्या (जीप पर सवार इल्लीयां), धार्मिक विसंगतियों का चित्रण (बंसीवाले पूजारी), (गोडेस लक्ष्मी याने पइसा का गडेस), (बुद्ध के दांत), शिक्षा क्षेत्र और साहित्य क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों का चित्रण (विश्वविद्यालय के गुरुजन), (पुराने पेड़ की बातें), (मेघदूत की पुस्तक–समीक्षा), (नदी में खड़ा कवि) आदि भी उनकी रचनाओं को हम देख सकते हैं। "महंगाई", "महंगाई और समाजवाद" आदि रचनाओं में जोशी जी ने भारत के मध्य वर्गीय परिवार आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया है। शरद जोशी का व्यंग्य फलक इतना विस्तृत और व्यापक है कि हम उन सब को एक आलेख में सम्मेलित नहीं कर सकते।

निष्कर्ष

शरद जोशी जी आधुनिक हिन्दी साहित्य के युगधर्मी व्यंग्यकार है। उन्होंने अपने व्यंग्य लेखन से हिन्दी साहित्य में व्यंग्य साहित्य को एक स्वतंत्र विधा के रूप में प्रतिष्ठा दिलाई। शरद जोशी जी के व्यंग्य लेखन का लक्ष्य कबीर दास जी की भांति सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण ही रहा है। उन्होंने मरते दम तक अपने लक्ष्य से मुंह नहीं मोड़ा। उनका जीवन व्यंग्य साहित्य के लिए पूर्णतः समर्पित रहा। शरद जोशी जी का व्यंग्य साहित्य अमर है, वह दशकों बीत जाने के पश्चात् भी आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची

1. नायर, एस.एस सुकुमारन, *''हिन्दी–हिन्दी अंग्रेजी मलयालम शब्दकोश''*, सीसो बुक्स तिरुवनांतपुरम, दसवीं संस्करण, 2013,पृ सं 386।
2. विजयराव, येरावर संतोष, *''शरद जोशी के साहित्य में व्यंग्य''*, वान्या पब्लिकेशन, हंसपुरम कानपुर–208021, प्रथम संस्करण–2005, पृ सं. 7।
3. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, *''कबीर''*, प्रथम संस्करण,1942, हिन्दी ग्रंथ रतनागर कार्यालय, हरिबाग, मुंबई–9, पृ सं. 164।
4. चंदर, सुबाष, *''हिन्दी व्यंग्य का इतिहास''*, तृतीय संस्करण 2017, भावना प्रकाशन दिल्ली, पृ सं. 247।
5. वही पृ सं. 247।
6. विजयराव, येरावार संतोष, *''शरद जोशी की कहानियों में व्यंग्य''*, कन्या पब्लिकेशन कानपुर, प्रथम 2016, पृ सं. 229।

****